

(रवीन - जी)

४-क) उपर्युक्त काटमांडा 'सदृश स्वीकारा है' नामक पाठ से वह गई है, गढ़ी कवि पड़ी सदृशता से कहते हैं कि कि वे अपने जीवन के सुरभि-दृष्टि, उत्तर-चाहाप, अनुभव इत्यादि जो कुछ भी उनके जीवन में है वह सभा वह रखती है साथ स्वीकार कर लिए हैं क्योंकि उनके जीवन में जो भी है वह सब उनकी किमा के अधिकारियों आया है, इस प्रकार कवि सरलता के साथ अपने जीवन की सभी उपलब्धियों, असम्भवताओं रुप अनंत जी चीजों को स्वीकारे नहीं हैं।

५) गरीबी को अवक्तु करने के लिए कवि ने एक विशेषण का उपयोग किया है - 'गरीबी', 'गरीबी गरीबी', कहकर कवि नहीं बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि उनके जीवन की भद्र गरीबी कोई भजन्तरी नहीं है आपनु गर्व से अपनाई गई भद्र गरीबी स्वाभीमान के समान है, वह स्वाभीमान भी और प्रसन्नता के साथ इस गरीबी को स्थिति में जीवन आपने कर रहे हैं।

६) 'शीतर की सरिता' से कवि का आश्रम है उनके हृदय जो वहते गाँव, विचार अवधा प्रेग, कवि कहता है कि भै वह सब छोलिक है क्योंकि वह सब

ii)

iii)

iv)

५-९

उसने स्पंग आपने प्रिय का प्रेरणा से प्राप्त किया है, उसके उसकी जिन्हें दर और से उसके प्रिय से विश्व हुई है और उसके गविर को सहित जो उसके प्रिय को ही देन है।

वाप सौंदर्य : कब पंक्तियों में कवि आकाश को भी लो अँधेरे को कानी सिल के सजान बता रहे हैं, अद्धार के समझ का दृश्य है, जब इस घोर के डेम भी सूर्य की किरण छूटने लगती है तो अँधेरे और सूर्य की हल्की लाली दोनों शिलफर रेसा सौंदर्य विरकरती है कि कवि को लगता है भानो कानी सिल भाल के सर से घुल गई हो भा मिर स्लेट पर किसी ने लाल रुड़िया चाक मिट्टी घोल ही हो, भद्दों पर कानी सिल और स्लेट अँधेरे को स्पष्ट करता है और लाल के सर एवं लाल रुड़िया चाक सुभांद्र की लाली को।

- i) शिला सौंदर्य : i) कान्धांश की गाषा सरल, सद्ज, सुकोल्य है,
- ii) अद्दों ग्राहीण परिवेश की सुकृद का चित्रण किया है अंकित बे,
- iii) बृहत कानी ... घुल गई हो, पंक्ति में उपमा अलंकार है,
- iv) स्लेट पर ... भल ही हो किसी ने, पंक्ति में उप्रेष्णा अलंकार है,

केमरे में यह अपाहिज, लकड़ा के झुखोंते हो दिया कुरता की

कविता है, इसका चित्रण कवि ने वह अद्यते तरीके से किया है।
 कविता उपर से भी तो एक अपेक्षित की पीड़ा को बेवज़त करता
 है परंतु इसका पास्तारिक उद्देश्य कुछ और है है, अद सामाजिक
 उद्देश्य को प्रस्तुत करने वाली कविता प्रतीत होती है परंतु
 सच्चाई तो अह है कि कार्यक्रम संचालक को अपेक्षित की पीड़ा से
 कोई सरोकार नहीं है, वह अपेक्षित की पीड़ा को बेवज़त पाहता है
 और एक रोधक कार्यक्रम पाना पाहता है जिससे अधिक से
 अधिक लोग उसके कार्यक्रम को देखे और उसे अद्यता अनुभाव
 गिन सकें, अद कविता इस संघर्ष के उजागर करती है कि दृष्टिकोण
 पर दिशाएँ जाने वाले अधिक कार्यक्रम आरोग्य के द्वारा के
 कारण संवेदनशील होने का दिशापा करते हैं।

(30:-
11-क)

(उ०-ए) भनुष्म के हृष्म में प्रायः अनेक कौतूं आती रहती हैं और वह
 इन कौतूं, भावनाओं को सरल रूप से एक-दूसरे को बताता है.
 या बांटता है, परंतु ऐसी स्थिति वह हो सकती है जब व्यक्ति
 को एक सरल सी बात कहनी हो परंतु उसके लिए वह जाहिन
 शब्दों और भाषा का उपयोग करे, भावी स्थिति कविता, बात
 सीधी वह पर हो दिशाएँ गई है कवि के हृष्म में एक सरल
 सी बात आई वही जिसे वह प्रस्तुत करना पाहते हो परंतु

सरलता का मार्ग दृष्टिकोण कवि के जटिलता का पथ अपनाता, कवि ने सोचा था कि वह यह कात को अकेले के लिए जटिल शब्दों और उत्तम भाषा का प्रयोग किया जाए, इसका परिणाम ऐसा हुआ कि कवि की यह कात का प्रयोग वही रहे गया, कात नियंत्रित दृष्टिकोण के अन्तर्गत हो पूर्ण लगी, कवि कान्पांखों को, झटकों को, वाकओं को काट-दाट करने की कोशिश की परंपरुं कोई जाग नहीं हुआ, इस प्रकार कभी-कभी सीधी यह कात जी भाषा के चर्चाओं में देखी हो जाती है अतः इस फैसले सकते हैं कि सही यह कात का सही सरल शब्दों और वापर के साथ जुड़ना होता है,

उपर्युक्त कालकों के गुड़ को जो किसी किशोर आशु के होते थे जैसे बारह से सोलह वर्ष के आशु के उन्हें इंद्र सेवा कदा जाया है, वह गुड़ में एक साथ काहर निकलते थे निरस्त्र दृष्टिकोण किना धार्ती पर परस्त ध्यारणा किए इन्हें इंद्र सेवा इसलिए कदा जाया है क्योंकि वे गली-गली पूर्ख-पूर्खकर इंद्र भगवान से पानी भाँगते हो और स्वभ को इंद्र की सेवा समर्थने, इनका मानना पा कि भगवान पानी पाने वालों की वर्षी नभी कहेंगे जब लोग इन वर्तयों की लोनी को सुरक्षे होंगे वह पानी देकर प्रसान्न करेंगे,

- (x) लोरक को भृत वाल समझने वो कठिनाई होती है कि जब यहों
ओर पानी की इतनी कमी है, वहाँ ओर सूखा पहुँच है तब
वो लोग गुरुकिल से ज्ञ रवित किमा पावी इंद्र सेना पर
बाली-पाली उल्टको पानी की न को बर्चे वो क्यों
घटाते हैं ?
- (y) लोरक को भृत वाल इसलिए नदी समझ आती है क्योंकि वह
इसे अधिकरणारा मानते हो तो इंद्र सेना पर पानी लेकर से
इंद्र X देवता पर प्रसन्न होते हैं, लोरक के अनुसार भृत सभ
बेपूछी थी,
- (z) लोरक को इंद्र सेना पर क्ष पानी लेका जाना पसंद नहीं था, लोरक
के लिए भृत भूमध्यान भा औँ कहिए कि छुट्टूत्तम धानी की
करवाई लगती थी, इसलिए कवि ने इसे पानी की निर्भय करवाई
की है, सूखे के सभभ गुरुओं को, परहुओं को धीने का पानी
घर्षाप्त जाता हो नहीं शिल पाला था और कठिनाई से जआ
किमा हुआ पानी वो कड़ी निर्भयता से लोग कर्चों की टोली
पर डाल होते थे, इसलिए भृत पानी की निर्भय करवाई कहाँ
हो दी है,

22

(2-क) भवितव्य के महादेवी वर्गी के जीवन के प्रवेश करने से १६ महादेवी वर्गी और को देवातिन जगा थी थी, यह संतप्त थी है क्षांकि भवितव्य लोरिका को देवाती छोड़ने रखाने को दिमा करती थी, वह एक अंगुल गोली शोटी वह जगाती थी और उसके साथ गाढ़ा लाग चाली हो परोस देती थी, अबी सज्जी पकाती लो लोल नदी पकाती, तु भवितव्य को दृश्य, दृश्य, यी यह सब प्रसंद नदी था तो यह लोरिका को यी यह सब रखाने को नदी देती थी, वह लोरिका को जगाती थी कि बाजरे को तिल लगाकर जगाना गमा पुआ गरम फम अंदर लगाता है, मकई का शोत को जगा लगिया सवेरे फन मठ से आधिक सोंधा लगता है, ऊपर के यु यु (मुहूर्ते के हरे दोनों की शिखड़ी) फड़ी रखादिल होती है और समेंद गहुए की जप्ती संसार गर के दलुए को लजा सकती है, इस प्रकार भवितव्य लोरिका को तो देवातिन जगा थी थी थी परंतु शाहर का एक रसगुल्ला यी भवितव्य के पोपले गाल हो प्रवेश नदी कर पाया था,

२७

(२) चूरन वाले भगत जी पर बाजार को जात नदी पल सका क्षांकि व-
र्षाली जन से बाजार नदी जाते थे, उन्हें पल होता था कि उन्हें
बाजार से क्यां चाहिए, के बाजार के व काचौंडे में संभग पर
निमंत्ता रख पाते थे और सुंदर और ओरामदानक चीजों को

32

देव द्वारा घोषित करना। इसके बाद अधिकारी ने आठ संतोषी भी उनके ज्ञान वे अधिक से अधिक व्यक्ति को जोड़ने की चाहे। आ इसका गहरी थी, इस प्रकार वे लोलची अधिकृत नहीं थे और भोज का मगात जी से कोई रिक्ति नहीं थी। इस सब के साथ मगात जी के पास बाजार जाते सभी अधिकारी घन नहीं होता था जिन्हें पैसों की आवश्यकता हो क्षेत्र उन्हाँ द्वारा घन लेकर पंसारी की दुकान पर जाते थे। जीरा और भोज का एक रथीद लेते, वह दूर आने से उम्रादा करनी नहीं करता था, इस प्रकार घन के प्रति वह लोलची नहीं थे, एक सीधे साथे आठ संतोषी अधिकृत थे,

उ) एक फार उभागनगाँव के गोले वे लुहन गया था, वहाँ पंजाबी पदलपानों की कृति घल रही थी, लुहन से इस नहीं गया और वह चाँद सिंह जिसे शेर का बत्त्या कहा जाता है उसे पुनर्जीवन देती, कुशली वे चाँद सिंह उसे ओट व जोट से दबोज लिया और गहाराजा के आदेश पर कुर्की उफना दी गई, परंतु लुहन राजा से प्रार्थना किया कि उसे गोड़ने दिया जाए और उसे राजा वे उसे एक भौंका दे दिया, दर्शक जेन भी वह तुम्हारे के साथ चाँद सिंह और लुहन की कुर्की देखते

रहे थे, जुहन के सबको चकित करते हुए याँद सिंह को कुर्सी
में हरा दिया, लोग अपनी फुकाने के बंद भरके लौटे थे।
दोनों की कुर्सी को देरपने और अब वर्षों जैसे जश्कार करने
में, इस प्रकार उमामनगर के गोले में कुर्सी के याँद सिंह को
दराने जुहन के राजकीय पदलवान का दूजी प्राप्त किया था,

(ii) समिया के गाड़ी के नगक का पुड़िया के जान से इसलिए गोला
किया बनाकि अह यदि करतम पाने में पुड़िया देरपने लिए तो
समिया के सामान की नीचे पिंडी-पिंडी को देते और साथ ही
समिया और उसके गाड़ी की कहनाजी होती, भारत के नगक की
गोड़ी की गहरी यी इसलिए भी नगक के जान से समिया को
उसके गाड़ी के रोका था।

(30) (13) सिंधु घाटी सभ समता सम्पन्न की परंपरा उसमें आड़वर
गहरी थी, भाँड़ा सुनियोजित बाहर के, सड़के चौड़ी व छोड़ी दोनों
पकाए की थी, पानी की अद्दी व अवस्था थी, लोग रवेल
करते थे, लोगों के पास ताँबे का ज्ञान था, व अपने
सामान की जिमती भी करते थे, लॉक को लॉक, कोंसे का
बर्तन, वाक पर जैसे पिछाल हृद-भाँड़, अनपर कुई जैसे चिन्ह,

चौपह की गोलियाँ, रंग-विंडो पर्चरों के लिए शानको बाले हर
सोने के गोदने आदि सब उनकी संपन्नता के सपन थे, अद्य
के लोंग साल-सालाह का लुट दमाव रखते थे; आत्मात
के लिए बैल-उड़ी को प्रेमोग कहते थे, उनके मकानों में
गृहस्थी की सभी सुविधाएँ थीं, मंडार गुण हेमेशा भरे रहते
थे भी लोंग गुरुतियों बनाने भी देखते थे, इनके समाज में
एक रूपता थी, कला भी सुरक्षी थी, जो राजे प्रसाद था
पर्वती पोषित न थे समाज पोषित था, इस समाज ने
संपन्नता हावे पर भी आड़वर का ओभाव था अद्य पिकाल
भवन, मंदिर, बड़ी थी, राजाओं छवें जहंतो की समाधियाँ - जो
नहीं हैं, गुरु और ओजाई सब आकाई हो होते होते थे,
नरेश के सिर पर का गुलुट आकाई हो लुट ही होता था,
जोके जो होती होती थी और भकान भी होते होते बनते
थे, इन मकानों के कमरे ने और जो होते होते थे, अतः
सिंधु सभ्यता समस्ता आड़वर-विदीन समस्ता थी,

(१५) भश्वोधर को उनी सभन के अनुसार अपने आड़वर
आपूर्वक परिवर्तन लाने भी सफल रहती है यहाँ भश्वोधर
रेसा नहीं को पाते क्योंकि भश्वोधर किशानी की नीक

पर यलते थे, के उनके लताएँ शुद्धों का साथ नहीं होड़ना
 चाहते थे, वे अंग पश्चिमावादी गांधीसिकता के अनुकूल थे;
 जैसे किंशनदा ने उन्हें जब्दी सोना और सुवाद सवेरे उठना
 कि सिखाया था, इसके अतिरिक्त रिश्तेदारों से जुड़ाप और हर
 रुक्षी व दुर्भ के अपसर पर रिश्तेदारों को आद करना था।
 किंशनदा ने अशोधर को लताया था, भारतीय संस्कृति के जो
 अशोधर का लगाप था उसका कारण थी किंशनदा द्वारा,
 जैसे अशोधर शब्दनीला वालों को व्यर का एक ब्रजरा द्वारा
 कहते थे, जेओ बदलने के लिए लोगों को अशोधर अपने पर
 पर आमंत्रित करते थे और दोनों गेंगजन गवाना, भृंग सब
 अशोधर के परिवार वालों को नहीं जाता था, परंतु अशोधर
 के संस्कार भृंग सब उन्हें होड़ने नहीं देते थे, अशोधर भारतीय
 शीर्ति, संस्कृति के पुजारक थे, इसलिए उन्हें अपनी बेटी का जीस
 पढ़ना, अब्दी घटनी का किना काँड़ का छत्ता उभे पढ़ना पसंद नहीं
 था, इस प्रकार अशोधर पुराने शीर्ति-रिपाजों को भृंग पकड़ ले ले
 थे और उनकी पत्नी बट्टों के साथ आधुनिक गोड़ बन रही
 थी, किंशनदा का प्रगाढ़ अशोधर अपर इतना व्याप्त था कि वे
 अपने अंदर परिवर्तन लाने गे असाध थे,

- 14-ए) 'जम्भ' शीर्षक कथाकार के परिश्रमी मु प्रवृत्ति को उजागरण करना
भेदभाव के जीवन के दर आँड़ पर संघर्ष किमा था, भेदभाव
के अंदर हुआ था, आँग विवास था और वे जुआइ
प्रवृत्ति के थे, वे कभी दार न आनकर आँगे बढ़ते रहे
इस संदर्भ में पाठ का शीर्षक पूरी रूप से सार्थक और
उचित है नियन्त्रित लक्ष्य भद्र सिद्ध करते हैं।
- i) भेदभाव के पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किमा, दूषित दृष्टिकोण
पाठशाला न भेजे जाने पर १ दार न आनकर आजड़ा।
- ii) भगाए, छाँ और देसाई, सरकार की भद्रता थी।
कदां के विपरीत परिवृत्तियों से वे संघर्ष करना पड़ा था।
- iii) शारारती वर्षयों दृष्टि परेशान किए जाने पर वह अपना वस्त्र
वदनकर कदां जाने लगे थे।
- iv) वह अत्यंत भेदनल के साथ पहाड़-तिरपाई को लगे तो जिससे
आठ गांवित समझ गे आने वाला आठ एक दीवार आ
- v) दीप लग गए।
कसांत घाटिल नामक दोस्त की संगति ने उड़े पहाड़ की ओर
आए प्रेरित किमा और वे कदां में प्रवग आए।
- vi) भेदभाव के लिए बनने के लिए वे संघर्ष किमा, परवाहों को
चोराएं समझ गए रखते हुए काम करते समझ गए बाबिला

जिर्हीला कहते हैं और मिस मराठी मास्टर को दिखाते हैं, मास्टर को सदाचारा ने लेखक को एक अस्त्रो कवि कहने को बनाया, इस प्रकार पुरे जीवन आ जाया हो लेखक को संघर्ष किया और 'जुझ' राह और अर्थ वा संघर्ष होता है इस प्रकार भृत्यक उचित और सार्वजनिक है।

(२१०५ - क)

अ० १३) जीवन जीवे का हो गतिशील जीवन आपने करने का तरीका आ गायी, इसके हो हो गतार गए हैं — औरों की सुनाकर उनसे प्रभावित होकर आ मिस आपने आप की सुनाकर गतिशील संभ अपना आयी और आपने विश्वासा हें शुल्कों के साथ,

२१) जो उच्चार जीत है वर्षी जीत है क्योंकि उसका जीवन धोया होता है, जिस्या होता है, उपरी दिखावा होता है, केवल होंगा और लिपापुत सा जीवन होता है।

३) जो व्यक्ति दूसरों के प्रभाव से अपने जीवन को दिशा देते हैं वे सब वे जीवन ही नहीं जीते हैं क्योंकि ऐसे जीवन वे वे केवल दूसरों की नज़र कहते रहते हैं; संभ पर आई विश्वासा

गढ़ी होता, सौभ का पता नहीं होता, न कुछ जानने का भी है ॥
 छोली है ऐसे व्यक्ति को और न ही कुछ रखो जो जी, एक
 आराम का आर्द्ध अपना चेत लेते हैं - दूसरों के राह पर
 चलने को,

अ) अनुकूला ज का अर्थ है अनुकूला करना अवृत्त देखने का
 कुछ अपनाना। अनुकूला से बिन्द है, क्योंकि
 अनुकूला हो जाओगा को कुछ पता नहीं होता है, सौभ, परमामा,
 रम, श्री जित्तास जित्तास मा नहीं होली पर्तु अनुकूला का
 लिए श्रद्धा पाइए होली है स्वंभ पर श्रद्धा और तब गमनम्
 का दून, उसके शीरण का जागेगा और कई बाँते होते
 जानाहरात जैसी पतीत होंगी, दिल करेगा कि यथा हो।

इ.) निजता इसलिए गदरपूर्ण है कि दो स्वंभ का बोध हो,
 उस स्वंभ सोच, बिचार, विभावी को और निर्णय लें, इष्टाप की
 ललाच के लिए जो निजता का दूना आपश्वक है और उस
 के तब होगा जब दूसरों का सिरपामा कुआँ सब बिदा
 कर दिया जाए।

(८) कर्मी अनासक्त न होने पर वांच्यता है;

(९) ग्रंथांश का उचित सार्थक होगा - "जीवन : अनुकरण और अन्वेषण"

उपर्युक्त लिखे हुए घोड़ी सी सनक और घोड़ा सा पागलपन वाहिनी
इसके अतिरिक्त आवाज का बुलांद करना पड़ेगा और मुख्यतः भर जाने का हुनर्।

(१०) सभभृत्यार और सुलभे हुए लोगों वांच्यता, सनक और
म. नड़ने का जोश बहुत ही दूसरी विधि के गदी नह सकते,

(११) 'पर मे भीषण आग लगाने' से कवि का तात्पर्य जटिलताओं से है
और असुरक्षित होने की स्थिति से, केवल मुसीबतों से विरा होने
की स्थिति बताई गई है

(१२) 'अमृतलस जाने का हुनर' का मान है संघ की कुर्की होने से,
फली देने से है

(२७०५ - २७)

अ०:- ५.क) विशेष लेखक के दो क्षेत्र हैं -

- न्यायालय
- लेखन और प्रिण्ट

✓ रु.) समाचार पत्र द्वारा अपने संपादकाताओं के नीचे काग का विभाजन उनकी दिन-वस्थी और ज्ञान के व्यापक रूप के किम्बा जाता है, इसे बीट रिपोर्टिंग कहते हैं

घ.) गदरपुरी लेखकों के लेखों की नियमीयता व्यूरलों के संबंध लेखन कहते हैं, इससे लेखक के गाँव आविष्टप्रथा कहते हैं,

इ.) समाचार लेखक के दृष्टि कक्षाएँ - कभा, कल, काँड़ा, कूस, काँव और वर्षों,

आर-४२, आकरा २०१८

फोलकाता-७०००२९

गितिमाल्लुज,

टिक्काक: ०६.०३.२०१८

पुर्ण सेवा थे;

सचिव

परिवहन मंत्रालय

कोलकाता ३०००-४२

[विषय: सड़क की हुई बिंदुओं पर सुव्याप्ति की आवश्यकता,]

माध्यम,

मैं निचो कोलकाता के गिरिमाल्लूज अंचल की निवासी हूँ अमेरिकी अ.व.

रहने वाला वार्षि १७ ई) गामा पट्टु इवर कुदू पर्वी से सड़क पर हुई बिंदुओं अलगत तेजी से बहती जा रही है, तो इस विषय पर आपका दमान आकृष्ट करना पाएं।

आए दिन हम सभायार पत्रों में सड़क पर होने वाली हुई बिंदुओं के बारे हैं यह रहने वाले सुनते हैं इससे लोगों की मौत ली जो हो जाती है साथ ही परिवार के सदस्यों को गारी बीड़ा भी होती है भवी मौत न भी हो तो गारीर का गारी शुक्सान होता है अतः इन सड़क दादसों को धामों की आवश्यकता है शात के समय ले दादसे और अधिक होते हैं क्योंकि परिवहन घलावे काला भा तो गढ़ा में पुर होता है और 'हेड लाइट' भाई भ

जल्माता है आ किंतु कभी क्यारे गाड़ी की गति इतनी अधिक होती है कि समझ रहते भाषण संभालना आसान नहीं। अतः ऐसे अनुसार इसे धारणे का सुझाउ उपाय बहुत सकता है कि वाहनों की गति तथा की जाए और वाहन जो सड़कों पर दौड़ रहे होते हैं वे ठीक-ठाक हो जायें। इस लाइट आ चिन्ह इत्यादि सब जीवों पर तो होइ दू, इसके साथ-साथ लोगों को भी बचेत करना आवश्यक है। ऐसे हिस्त सु भूमित पर विचार अपश्यक करें। श्री आपसे प्रार्थना करती हूँ कि जल्द ही इस विषय पर कार्य करें, इस पर जंभीरता से कोई कदम उठाएं। सर्वान्नमवाहे !

(आपका) शपथीभा

अ. व.

3

‘मिन गोब्राट्टल सब सुन’
आजकल भवि किसी के पास कोई एक चीज नहीं आ जाती है तो वह ही ‘गोपाइल’ कोई रिक्ति चालक ही नहीं आ पड़ा पराविकारी सब के पास भूत देखते

ही बनता है, इसकी उपयोगिता नहीं लुहत है, आज हम इस को
 संसार के किसी भी कोरे में रहे अपने सो - संविधियों, प्रिय
 जन) से छान भार भी सपके लो सकते हैं, गोबाडल द्वारा
 विद्यार्थी जन शिक्षक के अभाव में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं
 और आ ज्ञान भी उच्च वृद्धि होती है, गोबाडल द्वारा हवाई
 टिकट, रेल टिकट और ऑफ ऑफ चीजें लुक की जा सकती हैं,
 आजकल गोबाडल वर्षों के गोरंजन करता है और गोरंजन
 का भी साधन बन चुका है, अदि 'स्मार्ट लोन' हो लो केवल
 कोर चीत तक ही सीधी सीधी जड़ी होती उसकी उपयोगिता,
 उसके द्वारा हम 'आँग लाडल' शरीदारी भी कर सकते हैं।
 माय ही एक - दूसरे एक चैर देख कर भी बाँते को
 सकते हो, भृत भृत 'गोबाडल' भौगोलिक दूरी का लुहत हद
 तक कर करने भी सहायक रहा है, गाना सुनना, समाचार सुनना
 भृत सब - भी इस ओबाडल गोबाडल द्वारा संभव है अतः
 इसका भी जान इतना स्मापक हो चुका है और हमारे जीवन
 को भृत गोबाडल इतना भृत प्रगति कर चुका है कि वह
 हम आज हमारे जीवन का एक भृतपूर्ण और बेंचुका है।
 और हम भृत सकते हैं कि गोबाडल के किस अभाव भी
 हमारा पुरा जीवन सुना है।

४

‘वर्चयों में हुतिं-दोष की समस्या’

७.

इस शुग का एक समस्या जो सभी को परेक्षान पर रखी है।
 वह है वर्चयों में हुतिं-दोष, ब्रह्म कम आशु के वर्चयों की
 आज ऐनक लेगा। देरवे जाते हैं, अद्य तक की कोई-कोई
 वर्चये तो एक; वे वर्ष की द्वारा आशु से ही ऐनक पहले
 पर भजन्नर होते हैं। इसका काण पोषण की कमी हो
 सकती है और आज गिलावट परम सीधा पर पहुँच गया
 है। इसलिए इसलिए शुद्धि समाप्त हो चुकी है। साथ ही
 गांगात्री दाढ़ी वीरा जिंदगी जे-सोने-उठने की समस्या में
 जो परिवर्तन आने लगे हैं जिससे वारी की साथ-साथ नेत्र
 की कमजोरी हो रही है अत्यधिक पहाड़ी का बोझ आए
 पोषण के कठी दोनों गिल के गह समस्या उपर्युक्त का
 रही है। गह उगाते समाज की जगह समस्या है। और व्या-
 वर्चयों में हुतिं-दोष इसे भी कहा जा सकता है कि आज के
 सही-गान्त, अर्द्धे-लुरे जे खक्की नहीं देरव पा रहे हैं आज के
 अपने जन को करने पर आत्म है और आता-पिता की
 कातों पर द्वारा नहीं हो रहे हैं। जिससे कि संघ को
 अंधकार जे ठकेल रहे हैं और अपना भवित्व अपने हाथों
 नहीं का रहे हैं। जो तेजा का भवित्व रखते हैं, वर्चयों के

“रपेल के द्वेष दो उमरता भारत”

प्रगति की ओर न कहता भारत खेल की हुनिमा में भी अपना एक अच्छा स्थान लगा रहा है, आज खेल का कोई भी क्षेत्र है सा नहीं है जहाँ भारत का नाम न आता हो भले ही पहले स्थान पर भारत का नाम न हो पहले स्थान ले रहे हैं, और यह बात सराहनीय है कि भारतवासी बिंबर पर प्रभास कर रहे हैं कि वे अपने देश को पहला स्थान दिला सकें, किंतु वे पुरुष लीग ले अच्छा प्रदर्शन करती ही हैं पर आज भाइला लीग भी इस खेल में चमत्कार प्रदर्शन करती देखी जा रही है, साथ ही अन्य खेल में - फुटबॉल, फॉलीबॉल, बैडमिंटन इत्यादि सभी खेलों में भारत अच्छा जगते का प्रभास कर रहा है, इमां देश के राष्ट्रीय खेल 'हॉकी' में पहले स्थिति बहुत ही खराब थी पहले आज स्थिति में सुव्याप साफ् हुआ होय है साठना नेहपाल, सानिमा रिंजी आए थोनी, विद्युत, झुलन गोस्वामी के साथ-साथ आज अनेक भुवा रिप्लाइ हर क्षेत्र में आगे आए आते दिन रहे हैं और अच्छे खेलों में अच्छा प्रदर्शन करके देश का नाम और उचाइओं पर ले जा रहे हैं।

